U.G. B.A.I (Hons) Paper - II
Sub - Philosophy

Dr. Saroj Ram
Dept. of Philosophy
D.K. College Dumraon

प्रश्न—ज्ञानशास्त्रीय सिद्धान्त के रूप में अनुभववाद की व्याख्या करें।

(Explain and examine empiricism as a theory of knowledge.)

उत्तर—अनुभववाद वह ज्ञानशास्त्रीय सिद्धान्त है, जो समस्त ज्ञान का स्रोत बाह्य इन्द्रियों द्वारा प्राप्त अनुभव को मानता है। यह बुद्धिवाद का पूर्णतः विरोधी सिद्धान्त है। अनुभववाद के अनुसार अनुभव ही एक मात्र ज्ञान का साधन है। इस सिद्धान्त के अनुसार यह स्पष्ट हो जाता है कि मनुष्य का प्रत्येक ज्ञान अर्जित है, जन्म के समय मनुष्य के मस्तिष्क में किसी प्रकार का ज्ञान नहीं रहता है। इसलिए अनुभववाद की मान्यता है कि जन्म के समय हमारा मस्तिष्क कोरे कागज के तरह रहता है तथा बाद में अनुभव के आधार पर ज्ञान अंकित होते हैं।

ज्ञान के मुख्य तत्व प्रत्यय है। इन प्रत्ययों की उत्पत्ति अनुभव से होता है। बुद्धि प्रत्यय को मात्र ग्रहण करती है, उत्पन्न नहीं करती है। बुद्धि प्रत्ययों को निष्क्रिय ढंग से ग्रहण करती है। इसलिए प्रत्यय का एक मात्र जननी अनुभव है। अनुभववाद के समर्थक प्रमुख तीन दार्शनिक है - लॉक, बर्कले, और ह्यूम। इन तीनों दार्शनिक ग्रेट ब्रिटेन के तीन प्रदेशों, लंदन, आयरलैण्ड और स्कॉटलैण्ड के रहने वाले थे।

(i) जॉन लॉक का कहना है कि हमारा समस्त ज्ञान प्रत्ययों से बनता है। लेकिन हमारे समाने एक प्रश्न उपस्थित होता है कि प्रत्यय क्या है? इसके उत्तर में लॉक का कहना है कि प्रत्यय किसी बाह्य वस्तु के प्रतिनिधि होते है। जैसे—टेबुल, कुर्सी, पुस्तक आदि बाह्य पदार्थ है। जब इसे देखते हैं तो हमारे मन में एक प्रतिबिम्ब द्वारा वस्तु का बनता है। जब आँख बंद कर लेते है तो उस वस्तु का प्रतिमा बनी रहती है। यही प्रतिमा लॉक के अनुसार प्रत्यय है। अतः समस्त ज्ञान इन्हीं प्रत्ययों से बनता है जो अनुभव के द्वारा प्राप्त होता है। लॉक का कहना है कि जन्म के समय हमारा मन एक स्वच्छ कोरे कागज के समान रहता है। इस मन में कुछ भी पूर्व से अंकित नहीं रहता है।

लॉक ने प्रत्यय को दो भागों में विभक्त किया है सरल प्रत्यय तथा मिश्र प्रत्यय। सरल प्रत्यय से मिश्र प्रत्यय का निर्माण होता है और हमारा समस्त ज्ञान बनता है। जितने भी बुद्धिवादी

Scanned with CamScanner

दार्शनिक है वे सहज प्रत्यय को जन्म-जात मानते हैं । बुद्धिवादियों का कहना है कि ईश्वर, आत्मा, धार्मिक और नैतिक मूल्य आदि प्रत्यय । वे प्रत्यय सार्वभौम और अनिवार्य होते हैं । इसके विरुद्ध में लॉक का कहना है कि सहज प्रत्यय नाम का कोई भी चिज अनुभव से पूर्व मन में स्थित नहीं होती । इसका खण्डन करते हुए, लॉक का कहना है कि—

(i) यदि कोई प्रत्यय जन्म-जात होता तो सभी व्यक्तियों का इसका एक समान ज्ञान होना चाहिए था । लॉक का कहना है कि कुछ नास्तिकों को छोड़कर विश्व में कुछ ऐसी जातियाँ हैं जो ईश्वर से अपरचित है इससे स्पष्ट होता है कि ईश्वर का प्रत्यय है, लेकिन इसमें अनिवार्यता और सार्वभौमिकता नहीं है । यही बात सभी प्रत्यय पर लागू होती हैं । यह प्रत्यय अगर अनिवार्य और सार्वभौमिक होते तो बच्चों, पागल और मूर्ख व्यक्ति भी इसका ज्ञान अवश्य रखते । लेकिन व्यावहारिक जगत में ऐसा देखने को नहीं मिलता । इसके विरोध में बुद्धिवादियों का कहना है कि इस सहज प्रत्यय बच्चों एवं पागलों में भी होते हैं लेकिन उसे इसका ज्ञान नहीं हो पाता है । लॉक का कहना है कि यह विशेष बात है कि एक ओर बुद्धिवाद इस सहज प्रत्यय को बुद्धि में निहित मानता है और दूसरी ओर कहता है कि व्यक्ति को ज्ञान नहीं है ।

(ii) नैतिक सिद्धान्तों को लेकर सहज प्रत्यय को यदि समर्थन किया जाए तो नैतिक प्रत्यय कर्त्तव्य, अकर्त्तव्य के नियम, अच्छे बुरे का विचार, सभी व्यक्तियों में सहज रूप से वर्तमान रहती है । लॉक का कहना है कि इसे भी सार्वभौमिक कहना भूल होगी । लॉक का कहना है कि एक भी नैतिक ज्ञान ऐसा नहीं है जो सार्वभौमिक हो । कुछ लोग जो पाप समझते हैं उसे ही दूसरे लोग पुण्य समझते हैं । जैसे कुछ लोग हत्या किसी भी जीव का क्यों नहीं हो, पाप समझते हैं, जबकि अनेक लोग देवता के सामने बलि देना पुण्य समझते हैं । अत: नैतिकता का प्रत्यय भी सार्वलौकिक प्रत्यय नहीं है ।

(iii) लॉक का कहना है कि हम किसे सहज प्रत्यय कहेंगे यह बुद्धिवादियों ने स्पष्ट नहीं किया है । यदि अनिवार्यता और सार्वभौमिकता ही सहज प्रत्यय की कसौटी है तो सूरज और उसका ताप, चन्द्रमा और उसका शीतलता भी सार्वभौमिक प्रत्यय है । लेकिन इन्हें हम जन्म-जात

Scanned with CamScanner

3

नहीं कहेंगे । हम इन्हें केवल अनुभव के द्वारा जान सकते है । अत: लॉक जन्मजात प्रत्यय का खण्डन करते हैं । लॉक का कहना है कि ज्ञान निर्माण के तीन तत्व है—(i) ज्ञाता (ii) ज्ञय (iii) प्रत्यय । ज्ञान वस्तुओं का होता है । ज्ञान प्राप्त करने वाला अनुभवकर्त्ता है तथा ज्ञान का माध्यम प्रत्यय है । अत: लॉक अनुभव को ही ज्ञान की उत्पत्ति का साधान मानते हैं ।

2. अनुभववाद के दूसरा प्रबल समर्थक बर्कले का कहना है कि ज्ञान केवल अनुभव के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है । ये एक रोचक उदाहरण द्वारा स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि एक बार मुझे जिज्ञासा हुई कि फाँसी लगाते समय कैसा अनुभव होता है, यह जाना जाए । इसलिए अनुभववादी बर्कले ने स्वयं फाँसी के फँदे गले में लगा लिया । जब उसके मित्र फाँसी के फँदे खोले तो बर्कले बेहोश थे । इतना कट्टर अनुभववादी होते हुए भी भौतिकवादी न होकर अध्यात्मवादी है ।

बर्कले अपने अनुभववादी विचार को लॉक के विचारों से ताल-मेल कराते हुए आगे बढ़ाई है । बर्कले लॉक के मनोवैज्ञानिक विश्लेषण को मानकर कहते हैं कि हमारा समस्त ज्ञान संवेदनाओं और इन संवेदनाओं के द्वारा होता है । ऐन्द्रिय बोध समस्त ज्ञान को उत्पन्न करते हैं किन्तु ऐन्द्रिय बोध जो बर्कले प्रत्यय कहते हैं, वह मन में ही रहते हैं लॉक ने इसके श्रोत के रूप में स्थित पदार्थ की कल्पना की थी, पर बर्कले का मत है कि ऐसा किसी पदार्थ का अस्तित्व नहीं होता । हम केवल मन्सके प्रत्यय का अनुभव करते हैं, जो प्रत्यय इन्द्रियों का देन है, भौतिक पदार्थों का नहीं । जैसे हमें आँख से रंग या प्रकाश का ज्ञान होता है, जीभ से स्वाद, कान से शब्द इत्यादि का बोध होता है । ये प्रत्यय एकत्र होकर वस्तु की संज्ञा देते हैं, और ये संवेदना के द्वारा मिलते हैं । इन प्रत्ययों का संहार रूप वस्तुओं से हमारे मन में सुख-दु:ख, प्रेम घृणा आशा-निराशा इत्यादि भावों को ज्ञान देता है । इनका ज्ञान हमें संवेदना से होता है जिसे बर्कले हमारे मन में कल्पना प्रस्तुत और स्मृति जन-प्रत्यय को माना है । इसीलिए को बर्कले को प्रत्ययवादी कहते हैं । इस प्रकार बर्कले के लिए अनुभव ज्ञान का साधन है किन्तु वह भौतिक पदार्थों का नहीं बल्कि ईश्वरीय प्रत्ययों का अनुभव है ।

3. अनुभववाद के तीसरा प्रबल समर्थक ह्यूम ने लॉक और बर्कले के तरह यह मानते हैं कि सभी ज्ञान अनुभव जन्य होते हैं । ह्यूम का कहना है कि अनुभव प्रत्ययों का होता है वस्तु

Scanned with CamScanner

का नहीं । ह्यूम का अनुभवादी विचार लॉक और बर्कले के अनुभववादी विचार के अस्वीकार करते हुए जड़, जगत, ईश्वर और आत्मा की सत्ता का खंडन करते हैं और कहते हैं कि अनुभव केवल प्रत्ययों का ही होता है, जो लगातार आते जाते रहता है । हम भ्रमवश एक स्थायी आत्मा की कल्पना कर बैठते हैं, जब कि आत्म नाम की चीज मनुष्य के पास नहीं है । ह्यूम कार्य कारण नियम का खंडन करते हैं, जिसे उसके पूर्व लॉक और बर्कले स्वीकार करते हैं । इनका कहना है कि कार्य कारण नियम कोई बुद्धिजन्य और सार्वभौम नियम नहीं है । बल्कि हम अपने अनुभव के आधार पर कार्य कारण के संबंध का ज्ञान प्राप्त करते है । हम केवल संवेदना और स्व संवेदना का अनुभव करते हैं । किसी जड़ पदार्थ का नहीं । इसी तरह आत्मा के बारे में ह्यूम का कहना है कि हमें कभी भी आत्मा का प्रत्यक्षीकरण नहीं होता । आत्मा कुछ नहीं है, बल्कि केवल भिन्न-भिन्न संवेदनाओं का प्रवाह मात्र है । इसी प्रकार ईश्वर का भी प्रत्यक्ष अनुभव नहीं होता । इसलिए इसकी सत्ता को भी ह्यूम खंडन करते हैं ।

ज्ञान निर्माण के संबंध में ह्यूम का कहना है कि हमारा समस्त ज्ञान अनुभव से है । वे मनुष्य के अनुभव के विश्लेषण करते हुए कहते हैं कि हमारे अनुभव के मूल में दो वस्तुएँ रहती हैं-- (i) प्रत्यक्ष (ii) संस्कार ।

संस्कार वे प्रथम भाव हैं जो प्रत्यक्षीकरण के साथ ही बड़ी तीव्रता से मन में आता है जो विचार या चिन्तन से बनते हैं वे प्रत्यय है । संस्कार के दो प्रकार होते हैं—(i) बाह्य, (ii) आन्तरिक । बाह्य संस्कार में हमारे इन्द्रिय बोध जैसे देखना, छुना, स्पर्श करना आदि है । आन्तरिक संस्कार में हमारे मनोवेग, प्यार, घृणा क्रोध आदि आते हैं । इस प्रकार प्रत्यय का भी दो रूप हो जाते है—(i) सरल प्रत्यय (ii) मिश्र प्रत्यय । सरल प्रत्यय का निर्माण हमेशा संस्कारों के समरूप होता है, जबकि मिश्र प्रत्यय के लिए यह आवश्यक नहीं है । इन्हीं प्रत्ययों और संस्कारों से स्मृति और कल्पना शक्ति मिलकर ज्ञान का निर्माण करती है ।

ज्ञान निर्माण के संबंध में ह्यूम का कहना है कि बुद्धि बिल्कुल निष्क्रिय रहती है ।

आलोचना—अनुभववाद एक सुदृढ़ सिद्धान्त होते हुए भी स्वयं अपने आप को, अनेक दोषों से ग्रस्त होते हुए दिखाई देता है । जिसके कारण इसका अनेक आलोचना किया गया है—

Scanned with CamScanner

5

(i) अनुभववाद ज्ञान के निर्माण में बुद्धि को स्वीकार नहीं करता है इसका अर्थ यह है कि अनुभव ही केवल समस्त ज्ञान का निर्माण कर सकती किन्तु यह भी सच है कि केवल अनुभव से ही समस्त ज्ञान प्राप्त नहीं किया जा सकता है ।

(ii) अनुभववाद बुद्धि को निष्क्रिय मानते हैं किन्तु मनोविज्ञान इस विचार को गलत सिद्ध कर दिया है । मनोविज्ञान के अनुसार ज्ञान के प्राप्ति में हमारा मन सदैव गतिशील रहता है ।

(iii) अनुभववादी लॉक का कहना है कि बुद्धि के पास ~~इंद्रिय~~ ऐसा कोई भी चीज नहीं है जो ऐन्द्रिय के पास नहीं है । इसमें संशोधन करते हुए बुद्धिवादी दार्शनिक लाइबनित्स का कहना है कि ~~बुद्धि~~ अनुभव के पास कोई ऐसा चीज नहीं है जो ~~इन्द्रिय~~ बुद्धि के पास नहीं है ।

(iv) अनुभववादी स्वयं मानते हैं कि अनुभव के द्वारा हमें सर्वमान्य एवं अवश्यभावी ज्ञान की प्राप्ति नहीं होती । ऐसी स्थिति में अनुभव को सम्यक ज्ञान मानना उचित नहीं होगा ।

(v) ज्ञान का अनुभवादी विचार की परिणती ह्यूम का संदेहवाद में होता है जहाँ जाकर दर्शन एक अंधेरे गर्त्त में गीर गया है । यहाँ न नगर की सत्ता है, न ईश्वर की आत्मा की ।

(vi) अनुभववादी संवेदनाओं को मानते हैं किन्तु वे संवेदनाएँ तब तक अर्थहीन है, जब तक कि बुद्धि के द्वारा इनका कोई अर्थ नहीं लगाया जाए। अत: बुद्धि हमारे ज्ञान के निर्माण में आवश्यक है ।

अत: अनुभाववाद के उपर्युक्त आलोचना ह्यूम द्वारा जगत, आत्मा, तथा ईश्वर जैसे भयानक परिणाम प्रस्तुत करने के बावजूद समकालीन दर्शन में बुद्धिवाद से अधिक अनुभववाद का ही समर्थन मिला है । यह मान्य है कि ज्ञान प्राप्ति का साधन मात्र अनुभव ही नहीं कहा जा सकता है बल्कि बुद्धि भी है । अनुभववाद में केवल दोष ही नहीं है इसमें विशेषता भी है । बुद्धिवादियों ने ज्ञान को बिल्कुल अमूर्त बना दिया है लेकिन अनुभववादियों ने ज्ञान को संवेदन जन्य कहकर दर्शन के क्षेत्र में एक क्रान्ति ला दिया है । सच पूछा जाए तो अनुभववाद का चरम विकास ही Kant के दर्शन का जन्म देता है । कॉट ने अपने पूर्ववर्ती दोनों मतों की समीक्षा की और कहा कि दोनों में एकांगिता है ।

Scanned with CamScanner